IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

अध्यापक शिक्षा में गुणवत्ता विकास हेतु मूल्य परक शिक्षा का योगदान

-डॉ. चंचल कुमार द्विवेदी

-डॉ. प्रकाश नारायण तिवारी

मूल्य शिक्षा हमारे अंदर नैतिक मूल्यों का विकास करती है। ये सीखने के साथ-साथ हमारे व्यक्तित्व में भी विकास करती है। अमेरिकी मनोवैज्ञानिक लॉरेंस कोहलबर्ग का मानना था कि बच्चों को एक ऐसे माहौल में रहने की जरूरत है जो दिन-प्रतिदिन के संघर्षों की खुली और सार्वजनिक चर्चा के लिए अनुमति देता है। Value Education की महत्ता हमारे पर्सनालिटी डेवलपमेंट में सहायक है तथा विद्यार्थी के गुणों में विकास करता है। यह हमारे जीवन में अनुशासन के महत्व को भी बताता है। इतना ही नहीं यह हमारे अंदर समय के महत्व को समझने की क्षमता को विकसित करता है। खेल के महत्व को समझना, भी मूल्य शिक्षा को समझने तथा रोचक ढंग से व्यक्तित्व के विकास में प्रमुख भूमिका निभाता है। इस ब्लॉग में मूल्य शिक्षा के बारे में विस्तार से जानते हैं।

भूमिका :- संसार में अनेक व्यवसाय है। प्रत्येक की अपनी जिम्मेदारी होती है। जैसे-डॉक्टर, इंजीनियर, वकील, सैनिक और देश की सुरक्षा के लिए प्राणों की बाजी तक लगाकर सिपाही बनते है। ऐसे ही शिक्षक भी बना जा सकता है। अध्यापक शिक्षा का ध्येय यही है। अध्यापक शिक्षा स्नातक या अधिस्नातकों में शिक्षकों की जिम्मेदारियों कों निभाने की योग्यता विकसित करती है।

अध्यापक शिक्षा वह है, जिसके द्वारा ही व्यक्ति का चारित्रिक और व्यक्तित्व का विकास किया जाकर मूल्यों पर आधारित शिक्षा के लिए अनुकूल परिवेश का निर्माण किया जाता है। शिक्षक का ही कार्य मानवीयता, भावनाओं की अनुभूति देना है। यही कारण है कि सारी मशीनी सुविधा होने के बावजूद भी शिक्षक का कोई विकल्प नही है। शिक्षा का कार्य मानवता को प्यार का कोरा अर्थ बताना नही बल्कि उसकी प्रगाढ़ अनुभूति देना है। इस अनुभूति की अनुभूति कराने के लिए शिक्षक की उपस्थिति अविस्थापनीय है, क्योंकि शिक्षक अर्थ नही अनुभूति देता है।इसीलिये अध्यापक शिक्षा बहुत जरूरी है और साथ ही उनमें नैतिक मूल्यों का समावेश होना भी बहुत जरूरी है, क्योंकि अध्यापक शिक्षा मनुष्य के व्यक्तित्व, चारित्रिक, सामाजिक एवं नैतिक विकास की शिक्षा है। अध्यापक शिक्षा आयोजन से सामाजिक दायित्वों को बल मिलता है। अध्यापक की गुणवत्ता का विकास अध्यापक शिक्षा से ही होता

है। वर्तमान परिपेक्ष्य में शिक्षा छात्रों को जोड़ने में सहायक है। अध्यापक ही नैतिक मूल्यों के विकास का आधार है। ईश्वर के तीन रूप मिलकर कार्य करते है। ब्रह्मा का कार्य-सृष्टि का सृजन करना, विष्णु का कार्य-उस सृष्टि का पालन-पोषण करना तथा महेश का कार्य-संहार करना। जिन कार्यों को ये तीनों मिलकर करते है, उन्ही कार्यों को शिक्षक अकेले करता है। इसीलिये शिक्षक को तीनों रूपों में परब्रह्म कहा गया है।

आज नैतिक मूल्यों की बात करें तो समय के साथ बहुत अन्तर आ गया है। आज का मानव बहुत स्वार्थी हो गया है उसमें स्व एवं पर की भावना विकसित हो गई है। इन्हीं कारणों से हमारे व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक जीव में दिन-प्रतिदिन तनाव एवं घुटन बढ़ती जा रही है। चारों ओर तनाव, कलह, भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी, दुष्कर्म, हिंसात्मक विद्रोह पनप चुके है। ये सभी नैतिक मूल्यों के पतन के ही कारण है। हमारे नैतिक मूल्य इतने गिर गये है कि जीने का अर्थ ही बदल गया है। आज जब सम्पूर्ण विश्व पुनः मानव मूल्यों की स्थापना के लिए संघर्ष और संक्रमण के दौर से गुजर रहा है ऐसे में शिक्षक और अधिक मूल्यवान बन पड़ा क्योंकि वही मानवीयता और भावनाओं का वाहक है।

अध्यापक शिक्षा और नैतिक मूल्य : माता-पिता के बाद गुरु का को ही सबसे ऊपर माना गया है। गुरु अर्थात शिक्षक उस कुम्हार के समान है जो मिट्टी रूपी विद्यार्थी को एक बरतन का आकार देकर एक योग्य व उपयोगी पात्र बना देता है। गुरू किसी भी छात्र को ऐसी शिक्षा देकर एक बेहतर मनुष्य बना देता है। एक शिक्षक ही विद्यार्थी को समाज के प्रति उसके उत्तरदायित्वों से रुबरु कराता है। एक शिक्षक का सबसे मुख्य काम यह है कि वह अपने विद्यार्थी को वर्तमान और भविष्य को ध्यान में रखकर शिक्षा दे। शिक्षा में परंपरा और नवीनता का मिश्रण होना चाहिये। वो विद्यार्थी को केवल किताबी ज्ञान तक ही सीमित न रखे बल्कि उसे जीवन के व्यवहारिक ज्ञान की भी शिक्षा दे। विद्यार्थी तो एक गीली मिट्टी से समान होता है शिक्षक उसे जैसा ढालेगा वैसा ढल जायेगा। यहाँ पर शिक्षक की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण हो जाती है। नैतिक मूल्यों की जो शिक्षा वो विद्यार्थी को देगा उसका प्रभाव विद्यार्थी पर जीवन पर्यंत बना रहेगा। यहीं से उसके चरित्र निर्माण की प्रक्रिया आरंभ होगी। अतः नैतिक मूल्यों के उत्थान में शिक्षक की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

अध्यापक शिक्षा ही एक ऐसा माध्यम है जिसकी सहायता से विद्यालयी शिक्षा का संबंधीकरण उच्च शिक्षा के साथ किया जा सकता है। जो भावी अध्यापकों के समाजीकरण की दिशा में सहयोगी शिक्षण अध्यापक विद्यालयों के अध्यापकों का मार्गदर्शन एवं सहयोग परिणामोंन्मुख साबित हो सकता है। अध्यापक शिक्षा ऐसी तकनीक है, जिसमें शैक्षिक कार्यों के लिए अध्यापकों को प्रशिक्षण देकर शैक्षणिक कौशल का विकास किया जाता है। अध्यापक शिक्षा एक मिशन है जिसमें राष्ट्रीय विकास के लिए व्यक्तियों को विभिन्न संदर्भों में तैयार किया जाता है।

अध्यापक शिक्षा कई कारणों से महत्वपूर्ण है-

1 समाजिक मार्गदर्शन का महत्वपूर्ण अभिकरण है।अध्यापक प्रशिक्षण प्राप्त करने के कारण समाज में व्यक्ति को उसके कर्तव्यों और अधिकारों से अच्छी तरह परिचय करा देते है. अध्यापक शिक्षा समाजीकरण में सहायक है।

अध्यापक शिक्षा का महत्व सैद्धान्तिक और व्यवहारिक शिक्षा प्रदान करने में सहायक है।

2 शैक्षिक प्रक्रिया एवं शिक्षण कार्य में गतिशीलता लाने की दृष्टि से भी अध्यापक शिक्षा का महत्व है।

अभिप्रेरणात्मक एवं मनौवैज्ञानिक दृष्टि से छात्रों के ज्ञान में वृद्धि करने और शिक्षा के प्रति छात्रों की रूचि पैदा करने में भी अध्यापक शिक्षा महत्वपूर्ण है।

अध्यापक शिक्षा की आवश्यकता मनोवैज्ञानिक, उद्यमगतता, संविधानगत लक्ष्यों की उपलब्धि के लिए, राष्ट्रीय समस्याओं के समाधान के लिए, गुणवत्ता सम्पन्न अध्यापक की तैयारी के लिए शैक्षिक आवश्यकता, आर्थिक आवश्यकता सामाजिकता के लिये हुई। वर्तमान समय में शिक्षण की प्रक्रिया अत्याधिक जटिल हो गई है। प्रत्येक स्तर पर योग्य एवं कुशलता प्राप्त शिक्षक-शिक्षिकाओं को तैयार करने का दायित्व अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम का रहा है, किन्तु इस क्षेत्र में ऐसी अनेकानेक ऐसी समस्याएँ उत्पन्न हो गई है, जिनकी वजह से शिक्षा कार्यक्रम माध्यम से निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति कठिनतर होती जा रही है। इस प्रकार अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में अनेकानेक चुनौतियों दिन-प्रतिदिन सृजित और विकसित हो रही है। जिनका सामना करना प्रत्येक यर्थाथ एवं आदर्श अध्यापक का उत्तरदायित्व हो जाता है।

नैतिक मूल्य क्या है?

यह प्रश्न अपने आप में मूल्यवान है। नैतिक मूल्य ऐसी आचरण संहिता या सदगुण है, जिससे व्यक्ति अपने लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु जीवन पद्धति का निर्माण करता है तथा अपने व्यक्तित्व का विकास करता है। नैतिक मूल्य मनुष्य के अन्तःकरण में जगाती हुई वह शक्ति है जो उसे एक विशिष्ट प्रकार के कर्म करने के लिए प्रेरित करती है और उसके आचरण को अनुशासित करती है। नैतिक मूल्य परिवर्तनशील समाज की वह धुरी है जिसके कारण समाज का अस्तित्व है। व्यक्ति के आचरण और व्यवहार को समाज के समक्ष प्रस्तुत करने का कार्य नैतिक मूल्य ही करते हैं। यह भी कहा जा सकता है कि नैतिक मूल्य मनुष्यों के अन्तः करण में जगाती हुई वह शक्ति है जो उसे एक विशिष्ट प्रकार से कर्म करने के लिए प्रेरित करती है और उसके आचरण को शासित करती है। नैतिक मूल्यों में दया, समता, ममता, नम्रता, विवेक, क्षमा, तपस्या, बलिदान और त्याग जैसे गुणों का समावेश होता है।

हमारे कई महापुरूषों के नाम इसी संदर्भ में विख्यात है, क्योंकि वे नैतिक मूल्यों के लिए ही जिये और नैतिक मूल्यों के लिए ही मृत्यु का वरण किया ।

ठीक ही कहा गया है कि-

कर्म वही जिनसे मिले, सदा जगत में मान, जिनकी सब निंदा करें, उन्हें त्याज्य ही जान।

अध्यापक शिक्षा एवं गुणवत्ता: गुणवत्ता अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम का सार है। इसके न रहने पर अध्यापक शिक्षा न केवल आर्थिक तौर पर बेकार है, बल्कि शिक्षा स्तर के सम्पूर्ण स्त्रोत का हास है। अध्यापक गुणवत्ता का विकास अध्यापक शिक्षा की गुणवत्ता से ही होता है। अध्यापक ही नैतिक मूल्यों के बीज बोने का माध्यम है, जब बालक शिक्षित होने के साथ ही संस्कारित होगा तभी अध्यापक और शिक्षा में गुणवत्ता का सही पैमाना परिलक्षित होगा, क्योंकि शिक्षा दे देना ही और उसको कुछ बना देना ही पूर्ण नहीं है, अध्यापक की गुणवत्ता जब ही सार्थक होगी जबकि वह अपने शिष्यों में संस्कारित नैतिक मूल्यों के बीज को अंकुरित करके एक छायादार वृक्ष के रूप में खड़ा न कर दे, जो घर-परिवार, समाज और देश-विदेश में अपनी मिसाल कायम रख सकें, क्योंकि शिक्षा ही व्यक्ति की अन्तर्निहित शक्ति को उजागर करती है वर्तमान समय में शिक्षा के स्तर में गिरावट आई है। शिक्षा के स्तर की इस गिरावट को रोकने के लिए अध्यापक शिक्षा में सुधार और गुणवत्ता जरूरी है। अतःएव वर्तमान शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जिसके अन्तर्गत बालक स्वयं स्वेच्छा से शाश्वत नैतिक मूल्यों का पालन करें, जिससे व्यक्ति, समाज और सभी का कल्याण संभव हो। नैतिक मूल्यों की स्थापना में अध्यापकों की भूमिका हमारे आदर्श समाज के निर्माण और राष्ट्र के सामाजिक और सांस्कृतिक विकास में अध्यापक की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। मूल्य शिक्षा संबंधी प्रत्येक योजना का सफल क्रियान्वयन, शिक्षकों के वैयक्तिक व्यवहार, शिक्षक अधिगत प्रक्रियाओं व कार्यनिष्ठा पर निर्भर करता है। अपने शिष्यों के कल्याण के लिए पूर्णतः कटिबद्ध, परिश्रमी व सृजनशील शिक्षकों ने शिक्षा प्रणाली में व्याप्त असंतोष व नगण्य लाभों के बावजूद अपने दायित्वों को समर्पण भाव से निभाया है। शिक्षकों को मूल्यपरक शिक्षा के संचालन में सक्षम होना चाहिए। शिक्षकों को स्वयं के लिए मूल्यों का निर्धारण करना होगा। उन्हें मूल्यों के संबंध में स्वयं सचेष्ट एवं सक्रिय रहना होगा। मूल्यों के प्रति अपनी अपनी प्रतिबद्धता विकसित करनी होगी तथा मूल्यों के शिक्षण हेतु निश्चित शिक्षण संवहन खोजने होगे। सुयोग्य भावी शिक्षक तैयार करने का दायित्व शिक्षण संस्थानों / विभागों का है। भावी शिक्षकों की तैयारी के समय मूल्यपरक शिक्षा के सैद्धान्तिक, क्रियात्मक व शोध पक्ष पर विशेष ध्यान देना अपेक्षित है।

कुशल तथा प्रभावी शिक्षकों को तैयार करने की जिम्मेदारी मुख्य रूप से अध्यापक शिक्षा संस्थानों की है। शिक्षक छात्राध्यापकों के मूल्यों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते है। आजकल के अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम प्रायः नीरस, परम्परागत, जड़वत, निष्प्राण व सृजनात्मकता की हत्या के षडयंत्र है। प्रशिक्षकों के मशीन सदृश व्यवहार, अमनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण, अध्ययन विमुख नवाचार अपनाने से बचने की प्रवृत्ति, निम्नस्तरीय अभिप्रेरणा व परम्परावादिता ने मानव मूल्यों के विकास को बाधित किया है।

एन.सी.टी.ई. द्वारा अनुशंसित पाठ्यक्रमानुसार अध्यापक शिक्षा के दो प्रमुख क्रियाकलाप है-एक सैद्धान्तिक और दूसरा प्रायोगिक। कौल तथा एन.पी.ई. (1986) के प्रभावी कार्यक्रमों को अपनाकर हमारे अध्यापक-शिक्षक तथा छात्राध्यापक, अध्यापक शिक्षा केन्द्रों के मूल्य अभिमूख वातावरण सृजित कर लाभ प्रद अनुभव प्राप्त कर सकते है।

एन.पी.ई. में कई बातों से प्रतीत होता है कि मूल्यपरक अध्यापक शिक्षा की संभावनायें उच्च है। अध्यापक शिक्षा के मानवीय प्रारूप पर बल दिया जाना चाहिए ताकि शिक्षक शिक्षा के माध्यम से यह प्रयास किया जाना चाहिए कि विद्यार्थियों के मस्तिष्क में राष्ट्रीय चेतना का सुदृढ़ आधार बन जाये।

यंत्र तो सूचना देकर बालक को लोह मानव या सूचनाओं का पुंज अवश्य बना सकते है। बिना स्नेह कण रोपे बालक सृजक उर्वरक नहीं हो सकता है। यह स्नेह कण रोपने का कार्य शिक्षक ही कर सकता है। इन मानवीय पौधों को बढ़ाने के लिए अनुभूति को गहराईयाँ देने के लिए शिक्षक की भूमिका ही एकमात्र विकल्प है।

नैतिक मूल्यों का पतनः नैतिक मूल्यों में समय के साथ ही अंतर आ रहा है। नैतिक मूल्य इतने गिर गये है कि जीवन जीने का अर्थ ही बदल गया है। इसी कारण नैतिक मूल्यों का हास हो रहा है। नैतिक मूल्यों के पतन के लिए काफी हद तक जिम्मेदार हम व हमारा समाज और हमारी शिक्षा व्यवस्था है, क्योंकि कोई भी मनुष्य जन्मजात खराब नहीं होता, वातावरण उसे खराब बनाता है। मनुष्य स्वार्थी हो चुका है। उसमें पर की भावना विकसित हो गई है। वह बदला लेने को उतारू है। सतयुग से कलयुग की ओर बढ़ते बढ़ते हम देख रहे है कि प्राचीन नैतिक मूल्यों में धीरे-धीरे कमी आ रही है। नैतिक मूल्यों की यह संकटग्रस्त स्थिति विद्यालय, महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों के छात्रों एवं शिक्षकों सभी में व्याप्त है। यह एक सार्वजनिक समस्या बन गई है। विकास एवं शांतिप्रिय सुरम्य जीवन के लिए ये स्थिति अत्यंत घातक है।

नैतिक मूल्यों का समावेश अध्यापक शिक्षा की बात कर रहे है तो अध्यापक शिक्षा में नैतिक मूल्यों का समावेश आज की महती आवश्यकता है क्योंकि जब तक अध्यापक के अन्दर आचार, विचार, संस्कार के तौर-तरीके सही नहीं होंगे तो वह बालक कैसे संस्कारित करेगा।

शिक्षा देश की रीढ़ है जिस प्रकार विकृत रीढ़ से एक व्यक्ति स्वस्थ नहीं कहला सकता उसी प्रकार विकृत शिक्षा व्यवस्था से देश का निर्माण नही हो सकता। वर्तमान विश्व समाज को देखकर यह कहना कदापि गलत नही है कि आज भी शिक्षा व्यवस्था में कही न कहीं कोई कमी अवश्य है।

अगर गौर करेंगे तो देखेगे कि नैतिक मूल्यों का अभाव सर्वत्र दृष्टिगोचर हो रहा है। इसका मूल कारण-शिक्षा में नैतिक मूल्यों की कमी जबकि शिक्षा में नैतिकता का पुट ही उसे पशु से देवत्व बनाता है। इसीलिये इस समस्या से निजात पाने के लिए अध्यापक शिक्षा में नैतिक मूल्यों का समावेश जरूरी है। शिक्षा में नैतिक मूल्यों का स्थान सर्वोपरी है। हमारा संविधान नैतिक मूल्यों की अमूल्य निधि है-बालकों को मूल्यपरक शिक्षा देनी चाहिए जो मूल्य बताये गये है उन्हें शिक्षकों द्वारा शिक्षण के दौरान विद्यार्थियों के जीवन में उतारना होगा। जब सर्पूण विश्व मानव मूल्यों की स्थापना के लिए संक्रमण और संघर्ष के दौर से गुजर रहा है तो ऐसे में शिक्षक और अधिक मूल्यवान बन पड़ा है। उन्हे कायम रखने के लिए शिक्षा नीति में सुधार अपेक्षित है, क्योंकि छात्र ही तो भावी समाज के निर्माता, देश के कर्णधार है। शिक्षा समाज की वह पीढी है जिस पर पांव रखकर व्यक्ति अपने संस्कारों को संवारता है और शिक्षा को दिशा प्रदान करता है।

"एक डॉक्टर की गलती कब्र में दफन हो जाती है, एक इंजीनियर की गलती नींव में दब जाती है, लेकिन एक शिक्षक की गलती पूरे समाज में उभरकर आती है।"

इसलिए समाज सुधार व व्यक्तिगत निर्माण में नैतिक मूल्यों का होना अत्यंत आवश्यक है। निष्कर्ष :- नैतिक मूल्य परिवर्तनशील समाज की वह धुरी है जिसके कारण समाज का अस्तित्व है। व्यक्ति के आचरण और व्यवहार को समाज के समक्ष प्रस्तुत करने का कार्य नैतिक मूल्य ही करते है। यह भी कहा जा सकता है कि नैतिक मूल्य मनुष्यों के अन्तःकरण में जागती हुई वह शक्ति है जो उसे एक विशिष्ट प्रकार से कर्म करने के लिए प्रेरित करती है। और उसके आचरण को शासित करती है। नैतिक मूल्य ही व्यक्ति के चरित्र का निर्माण करते हुए उसे संस्कारों का प्रणेता बनाने की दिशा में अग्रसर होते है। नैतिक संस्कारों के संरक्षक कहलाने वाले मनुष्य की समाज और राष्ट्र के विकास में अपनी भागीदारी दे सकते है। नैतिक मूल्यों की पुनः स्थापना के लिए अध्यापक शिक्षा पर बल दिया जाना आवश्यक है।

शिक्षकों को सामाजिक तथा नैतिक मूल्यों के संर्वधन का एक सबल उपकरण बनाया जाना चाहिए। यह सुस्पष्ट है कि अध्यापक शिक्षा के सम्पूर्ण पाठ्यक्रम में मूल्यों के विकास के प्रति दिलचस्पी व्याप्त होनी चाहिए। इसके लिए अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम को पुनः अभिविन्यासित करके मूल्यों के विकास के लिए एक संस्थागत लोकाचार उत्पन्न करना होगा।

छात्राध्यापकों के शिक्षक जिन मूल्यों में स्वयं आस्था रखते है तथा जिनके अनुरूप आचरण करते है। उन्हीं मूल्यों को वे छात्राध्यापक में प्रत्यारोपित कर सकते है। देश के भावी कर्णधारों को सर्वोत्तम प्रकार की शिक्षा प्रदान करने के लिए मूल्यपरक अध्यापक शिक्षा अपरिहार्य है। क्योंकि नैतिक मूल्य ही व्यक्ति के चरित्र का निर्माण करते हुए उसे संस्कारों का प्रणेता बनाने की दिशा में अग्रसर होते है। नैतिक संस्कारों के संरक्षक कहलाने वाले मनुष्य समाज और राष्ट्र के विकास में अपनी भागीदारी दे सकते है।

अन्त में सभी शिक्षकों से यही कहूंगा कि - रोते मुखड़े आज फिर हँसा दो, कोई दुःखी न रहे इस संसार में। ऐसा नव-संसार बसा दो! ऐसा नव-संसार बसा दो!

संदर्भ ग्रन्थ :-

1 अध्यापक शिक्षा – एन.आर. सक्सेना, बी.के. मिश्रा, आर.के. मोहन्ती-आर. लाल डिपों।

2 अध्यापक शिक्षा – अमृत सेन- इंडियन पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, दिल्ली।

3 अध्यापक शिक्षा – आर.एल.चौपड़ा- स्वाति पब्लिकेशन

4 नैतिक शिक्षा शिक्षण - के.सी. मलैया – आर.एस.ए. इन्टरनेशनल आगरा।

5 अध्यापक शिक्षा - डॉ. जी.सी. भट्टाचार्य – विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।

6 अध्यापक शिक्षा -एन.आर. सक्सेना, बी.के. मिश्रा, आर.के. मोहन्ती-आर. लाल डिपों।

7 संकलित अंशों से

8 स्थानीय समाचार पत्रों से।

9 क्वालिटी का हायर एजुकेशन इन इंडिया चैलेंजिस एंड सॉल्यूशन

10 इंपोर्टेंस ऑफ़ एकेडमिक बैंक का क्रेडिट इन इंडिया'एस हायर एजुकेशन सिस्टम